

**Signature and Name of Invigilator**

1. (Signature) \_\_\_\_\_

(Name) \_\_\_\_\_

2. (Signature) \_\_\_\_\_

(Name) \_\_\_\_\_

Roll No. 

--	--	--	--	--	--

(In figures as per admission card)

Roll No. \_\_\_\_\_

(In words)

**J 6 5 1 0****Test Booklet No.**

Time : 2 1/2 hours]

**PAPER-III**

[Maximum Marks : 200

**PERFORMING ART**

Number of Pages in this Booklet : 32

Number of Questions in this Booklet : 26

**Instructions for the Candidates**

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

**No Additional Sheets are to be used.**

3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :

(i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.

(ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**

4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

**परीक्षार्थियों के लिए निर्देश**

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

**इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।**

3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :

(i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।

(ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**

4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

**PERFORMING ARTS**

**रंगमंचीय कलाएँ**

**PAPER–III**

**प्रश्नपत्र–III**

**Note :** This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

**नोट :** यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

**SECTION – I**  
**खंड – I**

**Note :** This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

**नोट :** इस खंड में **बीस-बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. “Classical Indian Dance in its highest moment, is the embodiment of music in its visual form.” Elaborate with examples.

“अपने तीव्रतम क्षण में भारतीय शास्त्रीय नृत्य अपने दृश्यात्मक स्वरूप में संगीत की साकार प्रतिमा है ।” सोदाहरण व्याख्या कीजिए ।

**OR / अथवा**

‘An actor is at the centre of the theatre’ – Do you agree ? Discuss giving suitable examples.

‘एक अभिनेता रंगमंच का केन्द्र होता है’ – क्या आप सहमत हैं ? उपयुक्त उदाहरणों सहित विवेचन कीजिए ।





2. Creativity is the spirit of discovering that which is unknown and non-sterotypical. Comment w.r.t. your dance style training (learning, performing etc.).

सृजनात्मकता अज्ञात तथा अ-रूढिबद्ध के अन्वेषण का भाव है । आपकी नृत्य शैली की शिक्षा (सीखाई, प्रस्तुति इत्यादि) के आधार पर टिप्पणी कीजिये ।

**OR / अथवा**

‘Theatre is the product of the collaborative relationship between the text and the stage.’ Justify the statement.

‘रंगमंच, मूल पाठ तथा मंच के बीच सहयोगात्मक संबंध का प्रतिफल है ।’ – इस कथन को तर्क सिद्ध कीजिए ।









## SECTION – II

### खंड – II

**Note :** This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only **one** elective/specialization and answer all the **three** questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 marks)**

**नोट :** इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल **एक** ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी के **तीनों** प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

### Elective – I

### ऐच्छिक – I

### DANCE

### नृत्य

3. Is the alliance between commerce and arts welcome ? Write on the basis of your dance style.  
क्या वाणिज्य तथा कलाओं के बीच गठबंधन स्वागत योग्य है ? अपनी नृत्यशैली के आधार पर विवेचना कीजिए ।
4. What are the merits and demerits of Traditional and Institutional Teaching of Dance ? How can we overcome its limitations ?  
पारंपरिक और सांस्थानिक नृत्य शिक्षण के गुण-दोषों का उल्लेख कीजिये । इसकी सीमाओं से हम कैसे पार पाएँगे ?
5. Adaptability of Indian Classical Dance to Modern Contemporary Themes. Discuss.  
आधुनिक सम-सामयिक विषय-वस्तु के साथ भारतीय शास्त्रीय नृत्य की अनुकूलनशीलता । विवेचना कीजिए ।

### OR / अथवा

### Elective – II

### ऐच्छिक – II

### DRAMA/THEATRE

### नाटक/रंगमंच

3. How Epic Theatre differs from Dramatic Theatre in terms of text and performance ? Discuss.  
मूल पाठ तथा अभिनेयता की दृष्टि से एपिक थियेटर किस प्रकार ड्रामेटिक थियेटर से भिन्न है ? विवेचन कीजिए ।
4. Does the study of Nātyaśāstra help in reviving Sanskrit theatre for contemporary audience ? Answer with suitable examples.  
क्या नाट्यशास्त्र का अध्ययन सम-सामयिक दर्शकों के लिए संस्कृत रंगमंच को पुनर्जीवित करने में सहायक है ? उपयुक्त उदाहरणों सहित उत्तर दीजिए ।

5. How the playwrights of your region have creatively used the elements of Traditional theatre form of your State ? Answer with suitable examples.

आपके क्षेत्र के नाटककारों ने किस प्रकार आपके राज्य के पारंपरिक रंगमंच के तत्वों का उपयोग सृजनात्मक रूप में किया है ? उपयुक्त उदाहरणों सहित उत्तर दीजिए ।













**SECTION – III**

**खंड – III**

**DANCE**

**नृत्य**

**Note :** This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

**नोट :** इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. How Indian mythology is depicted in your dance style ? Answer with examples of 2 compositions (song, story, interpretation).

आपकी नृत्यशैली में भारतीय पौराणिक कथाएँ किस प्रकार चित्रित होती हैं ? दो संयोजनों (गीत, कथा, व्याख्या) का उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिए ।

7. Explain the four Vrittis and Pravrittis as mentioned in Natya Shastra.

नाट्यशास्त्र में दी गई चार वृत्तियों और प्रवृत्तियों की व्याख्या कीजिए ।

8. Describe the Nritta technique of Bharatanatyam or Manipuri.

भरतनाट्यम् अथवा मणिपुरी की नृत्त तकनीक का वर्णन कीजिए ।

9. How does a dancer establish a bond with the spectator and bring about Rasāsvādanam ?

एक नर्तक दर्शकों के साथ तादात्म्य कैसे स्थापित करता है तथा 'रसास्वादन' उत्पन्न करता है ?

10. Describe in detail the elements discussed in Bhavaprakash or Natyadarpana, other than those given in the Natya Shastra.

भावप्रकाश तथा नाट्यदर्पण में, नाट्यशास्त्र में दिये गये तत्त्वों को छोड़कर, विवेचित तत्त्वों का विस्तृत वर्णन कीजिए ।





**OR / अथवा**  
**DRAMA / THEATRE**  
**नाटक / रंगमंच**

6. Write about a traditional theatrical form which uses Mahabarata.

किसी एक पारंपरिक रंगमंचीय स्वरूप के बारे में लिखिए जिसमें महाभारत का प्रयोग होता है ।

7. Define the Rasa-Sutra and name its constituents as per Nātyashāstra.

नाट्यशास्त्र के अनुसार रस-सूत्र की परिभाषा लिखिए तथा इसके संघटकों का नामोल्लेख कीजिए ।

8. Write about any one Rupaka and Uprupaka.

किसी एक रूपक तथा उपरूपक के बारे में लिखिए ।

9. Describe the Āhārya Abhinaya of Rāsaliḷā or Yakshagāna.

रासलीला अथवा यक्षगान के आहार्य अभिनय का वर्णन कीजिए ।

10. Write the contribution of Shri Bhaskar Chandawarkar to theatrical music composition.

रंगमंचीय संगीत रचना में श्री भास्कर चंदावरकर के योगदान के बारे में लिखिए ।

11. Write short notes on :

(a) Vaman Kendre

(b) Prithvi Theatre Festival

निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :

(a) वामन केंद्रे

(b) पृथ्वी थियेटर फेस्टिवल

12. Critically evaluate "Ghasiram Kotawal".

‘घासीराम कोतवाल’ का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए ।





## SECTION – IV

### खंड – IV

### DANCE

### नृत्य

**Note :** This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 marks)

**नोट :** इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है ।

(5 × 5 = 25 अंक)

When India attained political independence, there was a very definite dichotomy between the institutions of traditional culture, whether supported by the state or fostered by the individual, the community or by the Indian princes, and the institutions of education. On another level, one may say that there were four distinct groups. (1) The masses, mostly tribal and rural continuing to make and live their culture through a body of tradition which had been handed down from generation to generation. (2) An educated mass, large in numbers, which had lost the capacity for dialogue with its own national past or traditions. (3) A third, minority, group of elite educated in the best traditions of the West, but who had travelled back to deep awareness of the validity of the national culture. (4) A group comprising traditional scholars, writers, artists, musicians and painters, who continued to theorise, annotate and practise the traditional disciplines and the arts with authenticity and sincerity. They were often not involved with the political, economic and social changes through which the country was passing. They were living repositories of the oral tradition of a high sophisticated order. Some literate, some not but all highly trained in many disciplines. All cultured and sensitive. They were an effective minority.

– Dr. Kapila Vatsyayan

भारत के स्वतंत्र होने के समय पारंपरिक संस्कृति का अनुकरण करने वाली संस्थाओं – चाहे उनका भरण-पोषण किसी व्यक्ति, समुदाय अथवा भारतीय राजकुमारों द्वारा किया जाता हो – तथा दूसरे स्तर पर शैक्षिक संस्थाओं के बीच द्विभाजनीय अंतर था । हम यह कह सकते हैं कि चार विशिष्ट प्रकार के समूह विद्यमान थे :

(1) जनसमूह – विशेषतः जनजातियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के जनसमूह जो पीढ़ी-दर पीढ़ी से विरासत में प्राप्त परम्पराओं में जीते थे तथा उनका निर्माण करते थे । (2) एक शिक्षित जनसमूह – जिसकी संख्या बहुत अधिक थी – जिसकी अपने स्वयं के राष्ट्रीय भूतकाल या परम्पराओं के साथ संवाद करने की क्षमता लुप्त हो चुकी थी । (3) एक विशिष्ट-संभ्रात वर्गसमूह–जिसकी संख्या कम थी – जिसकी पाश्चात्य देशों की सर्वोत्तम परम्परा में शिक्षा-दीक्षा हुई थी, परंतु वे अपनी राष्ट्रीय संस्कृति की प्रामाणिकता के प्रति गहन रूप से जागरूक थे तथा वापस आ चुके थे । (4) पारंपरिक विद्वानों, लेखकों, कलाकारों, संगीतकारों तथा पेंटर्स का समूह जिसके सदस्य प्रामाणिकता तथा ईमानदारी के साथ सिद्धांतों का प्रतिपादन कर रहे थे, टिप्पणियाँ एवं टीकाएँ लिखते थे तथा पारंपरिक विधाओं तथा कलाओं का अभ्यास कर रहे थे । वे बहुधा उन सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों से सरोकार नहीं रखते थे, जिससे होकर हमारा देश गुजर रहा था । वे एक अति संवात उच्चस्तरीय मौखिक परम्परा के जीवित भण्डार थे । इनमें से कुछ साक्षर थे, और कुछ नहीं भी थे, परन्तु सभी के सभी उच्च रूप से प्रशिक्षित थे । वे सभी संस्कृतिकान एवं संवेदनशील थे । वे एक प्रभावशील अल्पसंख्यक थे ।

– डॉ. कपिला वात्स्यायन

Answer the questions according to your specialization.

अपनी विशेषज्ञता के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

15. By whom was traditional culture supported at the time of Indian Independence ?

भारतीय स्वतंत्रता के समय पारंपरिक संस्कृति का भरण-पोषण कौन करता था ?

16. Which was the first group supporting Indian Culture ?

भारतीय संस्कृति का समर्थन करने वाला प्रथम समूह कौन था ?

17. Where was the third group educated ? To what they had ravelled back ?

तीसरे समूह की शिक्षा कहाँ हुई थी ? वे किसलिए वापस आये ?

18. The last group comprised of whom ? What and how did they practise their disciplines ?

अंतिम समूह में कौन लोग थे ? वे अपनी किन विधाओं का अभ्यास करते थे तथा कैसे करते थे ?

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

19. Who were an effective minority ?

प्रभावशील अल्पसंख्यक कौन थे ?

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**OR / अथवा**

**DRAMA / THEATRE**

**नाटक / रंगमंच**

**Performance Tradition**

**Space**

Performing conditions, character of the performance space and seating arrangement of spectators in relation to the performers are some of the factors which determine the aesthetics and practice of traditional Indian theatrical forms.

The character of space and spatial conventions, play a vital role in determining all kinds of performance practices. In India, performance space can take many forms, shapes and character. It can be a special sacred space or, an ordinary space made special and sacred by demarcating and consecrating at, the ordinary space used for a variety of social and secular performances can be fields after the harvest, market squares, public parks and gardens, streets and fair grounds. It can be a space surrounding the sacrificial alter (vedi) as was the case with the vedic rituals, or a variety of spaces in a temple complex for many types of performances from ritual events to such highly evolved dramatic forms as Kuttyattam and Krishnattam.

– Suresh Awasthi

### प्रस्तुति परंपरा

#### स्थल

रंगमंचीय स्थितियाँ, रंगमंचीय स्थल की प्रकृति तथा रंगमंचीय कलाकारों के संदर्भ में दर्शकों के बैठने की व्यवस्था कुछ ऐसे तत्त्व हैं जो पारंपरिक भारतीय रंगमंचीय स्वरूपों के सौंदर्यबोध तथा मंचन को निर्धारित करते हैं ।

सभी प्रकार के रंगमंचीय प्रदर्शनों के प्रस्तुतीकरण के निर्धारण में स्थल तथा स्थानिक रूढ़ियों की प्रकृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । भारत में रंगमंचीय प्रस्तुतीकरण के स्थल कई रूपों, आकारों तथा प्रकृति वाले हो सकते हैं । यह एक विशेष धार्मिक स्थल हो सकता है या एक सामान्य स्थल हो सकता है, जिसे सीमांकित एवं अभिमंत्रित कर विशेष तथा पवित्र बना दिया गया हो । विभिन्न सामाजिक तथा धार्मिक मंचीय प्रस्तुतीकरणों के लिए जिन सामान्य स्थलों का उपयोग किया जा सकता है उनमें सम्मिलित हैं – फसल की कटाई के बाद के खेत, बाजार का चौराहा, सार्वजनिक उद्यान, गलियाँ तथा मेलों के आयोजन के स्थल । यह स्थल बलिवेदी के चारों ओर की जमीन हो सकती है जैसा कि वैदिक अनुष्ठानों में पाया जाता है अथवा अनेक प्रकार के प्रदर्शनों के मंचन हेतु मंदिर परिसर के विभिन्न स्थलों का उपयोग हो सकता है, जैसे आनुष्ठानिक कृत्यों से लेकर कूट्टीआट्टम तथा कृष्णाआट्टम जैसे उच्च रूप से विकसित नाटकीय प्रदर्शन ।

– सुरेश अवस्थी

15. Which factors determine the aesthetics and practice of traditional Indian theatrical forms ?

कौन से तत्त्व पारम्परिक भारतीय रंगमंचीय स्वरूपों के सौंदर्यबोध तथा मंचन का निर्धारण करते हैं ?

16. In determining performance space, what plays a vital role ?

प्रस्तुतीकरण स्थल के निर्धारण में किसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है ?

17. How is an ordinary space made special ?

एक सामान्य स्थल को विशेष कैसे बनाया जाता है ?

18. Which ordinary spaces become special for performances ?

कौन सा सामान्य स्थल प्रस्तुतीकरण के लिए विशेष हो जाता है ?

19. What are Kuttyattam and Krishnattam ? In which space they are performed ?

कूट्टीआट्टम तथा कृष्णआट्टम क्या है ? उनका मंचन किस स्थल पर किया जाता है ?

<b>FOR OFFICE USE ONLY</b>	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation)

Date .....